स्वयंः हरः। तस्मादन्नसमं दानं न भूतं न भविष्यति॥ ४८॥ कृत्वापि सुमहत्पापं यः पश्चादन्नदो भवेत्। विमुक्तः सर्वपापेभ्यो स्वर्गलोकं स गच्छति॥ ४९॥ अन्नपानाश्वगोवस्त्रशय्याच्छत्रासनानि च। प्रेतलोके प्रशस्तानि दानान्यष्टौ विशेषतः॥ ५०॥ एवं दानविशेषेण धर्मराजपुरं नरः। यस्माद्याति विमानेन तस्माद्दानं समाचरेत्॥ ५१॥ एतदाख्यानमनघमन्नदानप्रभावतः। यः पठेत्पाठयेदन्यान्स समृद्धः प्रजायते॥ ५२॥ शृणुयाच्छ्रावयेच्छ्राद्धे ब्राह्मणान्यो महामुने!। अक्षय्यमन्नदानं च पितॄणामुपतिष्ठति॥ ५३॥

इति श्रीशिवमहापुराणे पञ्चम्यामुमासंहितायामन्नदानमाहात्म्यवर्णनं नामैकादशोऽध्यायः॥ ११॥

अथ द्वादशोऽध्यायः

सनत्कुमार उवाच॥ पानीयदानं परमं दानानामुत्तमं सदा। सर्वेषां जीवपुञ्जानां तर्पणं जीवनं स्मृतम्॥ १॥ प्रपादानमतः कुर्यात्सुस्नेहादनिवारितम्। जलाश्रयविनिर्माणं महानन्दकरं भवेत्॥ २॥ इह लोके परे वापि सत्यं सत्यं न संशयः। तस्माद्वापीश्च कूपांश्च तडागान्कारयेन्नरः॥ ३॥ अर्द्धं पापस्य हरति पुरुषस्य विकर्मणः। कूपः प्रवृत्तपानीयः सुप्रवृत्तस्य नित्यशः॥ ४॥ सर्वं तारयते वंशं यस्य खाते जलाशये। गावः पिबन्ति विप्राश्च साधवश्च नराः सदा॥ ५॥ निदाघकाले पानीयं यस्य

अन्न के समान कोई दान न हुआ न होगा॥ ४८॥ बहुत बड़े पाप को करके भी जो बाद में अन्नदान करने लगता है, वह सब पापों से मुक्त होकर स्वर्गलोक को जाता है॥ ४९॥ प्रेतलोक में विशेष करके ये आठ दान महत्त्वपूर्ण कहे गये हैं—अन्न, पान, घोड़ा, गाय, वस्त्र, शय्या, छाता, आसन॥ ५०॥ इस प्रकार के विशेष दानों से मनुष्य विमान द्वारा धर्मराज के पुर को जाता है, इसलिये दान करना चाहिये॥ ५१॥ अन्नदान के प्रभाव से यह माहात्म्य पुण्यप्रद है। इसे जो पढ़ता या पढ़ाता है, वह समृद्ध हो जाता है॥ ५२॥ हे महामुनि! इस कथानक को जो सुने अथवा ब्राह्मणों को सुनाये, उसके पितरों को अक्षय अन्नदान का फल मिलता है॥ ५३॥

इस प्रकार परममाहेश्वर **पण्डित तारादत्त त्रिपाठी** के पुत्र **डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी** द्वारा रचित **शिवाटीका**, टिप्पणी आदि से संवलित शिवमहापुराण में अन्नदानमाहात्म्य-वर्णन नामक ग्यारहवाँ अध्याय समाप्त॥ ११॥

सनत्कुमारजी ने कहा—सभी दानों में जलदान उत्तम है, क्योंकि सभी प्राणियों की तृप्ति जल से होती है। जल को ही जीवन कहा गया है॥ १॥ इसलिये अत्यन्त प्रेम से पौसरा लगाना चाहिये और जलाशयों का निर्माण कराये, ये आनन्द को देते हैं॥ २॥ इस लोक तथा परलोक में ये सचमुच आनन्ददायक होते हैं। इसलिये मनुष्यों को बावड़ी, कुएँ, तालाबों का निर्माण कराना चाहिये॥ ३॥ प्रतिदिन पाप करने वाले पुरुष के आधे पाप को जल से भरा हुआ कुआँ हरता है॥ ४॥ जिसके खुदवाये हुए जलाशयों में गायें, ब्राह्मण, साधु तथा

तिष्ठत्यवारितम्। सुदुर्गं विषमं कृच्छ्रं न कदाचिदवाप्यते॥ ६॥ तडागानां च वक्ष्यामि कृतानां ये गुणाः स्मृताः। त्रिषु लोकेषु सर्वत्र पूजितो यस्तडागवान्॥ ७॥ अथवा मित्रसदने मैत्रं मित्रार्तिवर्जितम्। कीर्तिसञ्जननं श्रेष्ठं तडागानां निवेशनम् ॥ ८॥ धर्मस्यार्थस्य कामस्य फलमाहुर्मनीषिणः। तडागः सुकृतो येन तस्य पुण्यमनन्तकम्॥ ९॥ चतुर्विधानां भूतानां तडागः परमाश्रयः। तडागादीनि सर्वाणि दिशन्ति श्रियमुत्तमाम्॥ १०॥ देवा मनुष्या गन्धर्वाः पितरो नागराक्षसाः। स्थावराणि च भूतानि संश्रयन्ति जलाशयम्॥ ११॥ प्रावृड्तौ तडागे तु सलिलं यस्य तिष्ठति । अग्निहोत्रफलं तस्य भवतीत्याह चात्मभूः ॥ १२॥ शरत्काले तु सलिलं तडागे यस्य तिष्ठति। गोसहस्रफलं तस्य भवेन्नैवात्र संशयः॥ १३॥ हेमन्ते शिशिरे चैव सलिलं यस्य तिष्ठति। स वै बहुसुवर्णस्य यज्ञस्य लभते फलम्॥ १४॥ वसन्ते च तथा ग्रीष्मे सलिलं यस्य तिष्ठति। अतिरात्राश्वमेधानां फलमाहुर्मनीषिणः॥ १५॥ मुने! व्यासाथ वृक्षाणां रोपणे च गुणाञ्छृणु। प्रोक्तं जलाशयफलं जीवप्रीणनमुत्तमम्॥ १६॥ अतीतानागतान् सर्वान्पितृवंशांस्तु तारयेत्। कान्तारे वृक्षरोपी यस्तस्माद् वृक्षांस्तु रोपयेत्॥ १७॥ तत्र पुत्रा भवन्त्येते पादपा नात्र संशयः। परं लोकं गतः सोऽपि लोकानाप्नोति चाक्षयान्॥ १८॥ पुष्पैः सुरगणान्सर्वान्फलैश्चापि तथा पितॄन्। छायया चातिथीन्सर्वान्पूजयन्ति महीरुहाः॥ १९॥ किन्नरोरगरक्षांसि देवगन्धर्वमानवाः। तथैवर्षिगणाश्चैव संश्रयन्ति महीरुहान् ॥ २०॥ पुष्पिताः फलवन्तश्च तर्पयन्तीह मानवान्। इह लोके परे चैव पुत्रास्ते धर्मतः स्मृताः॥ २१॥ तडागकृद्वृक्षरोपी चेष्टयज्ञश्च यो द्विजः। एते स्वर्गान्नि हीयन्ते ये चान्ये सत्यवादिनः॥ २२॥ सत्यमेव परं ब्रह्म सत्यमेव परं तपः। सत्यमेव

मनुष्य जल पीते हैं, वह अपने सम्पूर्ण वंश को तार देता है॥५॥ जिसके जलाशय में गर्मियों में भी पर्याप्त जल रहता है, वह कभी भी घोर कष्ट नहीं पाता॥६॥ खुदवाये हुए तालाबों के जो गुण कहे गये हैं, उन्हें मैं कहता हूँ। तालाब खुदवाने वाला तीनों लोकों में पूजा जाता है॥७॥ मित्र के घर में तालाब का खुदवाना मित्रता को बढ़ाता है, उसके कष्ट को दूर करता है और यश को बढाता है॥८॥ जिसने सुन्दर तालाब खुदवाया, वह धर्म, अर्थ तथा काम के फलों को पाकर अनन्त पुण्यों का भागी होता है॥९॥ चारों प्रकार के प्राणियों का जलाशय परम आश्रय है। जलाशयों का बनवाना उत्तम लक्ष्मी को देता है॥१०॥ देवता, मनुष्य, गन्धर्व, भूत, पितर, नाग, राक्षस तथा स्थावर (पेड-पौधे आदि) सभी जलाशय का सहारा लेते हैं॥११॥ जिसके तालाब में वर्षाकाल तक जल रहता है, उसे अग्निहोत्र का फल मिलता है, ऐसा ब्रह्माजी ने कहा है॥१२॥ जिसके तालाब में शरत्काल में जल रहता है, उमे निःसन्देह हजार गायों के दान का फल मिलता है॥१३॥ हेमन्त और शिशिर ऋतु में जिसके तालाब में जल रहता है, वह बहुत सुवर्णदान का तथा यज्ञ के फल का भागी होता है॥१४॥ वसन्त तथा ग्रीष्म ऋतु में जिसके तालाब में जल रहता है, विद्वानों का कथन है कि उसे अतिरात्र तथा अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है॥१५॥ हे व्यास मुनि! अब जलाशयों के जीवन तथा प्रीणन फल कह दिये गये हैं, अब वृक्षों को लगाने के फलों को सुनो॥१६॥ जो पुरुष वन में वृक्ष लगाता है, वह बीते हुए तथा आने वाले सभी पितरों के वंशों को तारता है॥१७॥ ये लगाये हुए वृक्ष दूसरे जन्म में निःसन्देह उसके पुत्र होते हैं। मृत्यु के बाद वह अक्षय लोकों को प्राप्त होता है॥१८॥ वृक्ष अपने फूलों से देवताओं की, फलों से पितरों की, छाया से सभी अतिथियों की पूजा करते हैं॥१९॥ किन्नर, सर्प, राक्षस, देवता, गन्धर्व, मनुष्य तथा ऋषिगण सभी वृक्षों का सहारा लेते हैं॥२०॥ फूले-फले वृक्ष

परो यज्ञः सत्यमेव परं श्रुतम्॥ २३॥ सत्यं सुप्तेषु जागर्ति सत्यं च परमं पदम्। सत्येनैव धृता पृथ्वी सत्ये सर्वं प्रतिष्ठितम्॥ २४॥ तपो यज्ञश्च पुण्यं च देवर्षिपितृपूजने। आपो विद्या च ते सर्वे सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्॥ २५॥ सत्यं यज्ञस्तपो दानं मन्त्रा देवी सरस्वती। ब्रह्मचर्यं तथा सत्यमोङ्कारः सत्यमेव च॥ २६॥ सत्येन वायुरभ्येति सत्येन तपते रविः। सत्येनाग्निर्निर्दहति स्वर्गः सत्येन तिष्ठति॥ २७॥ पालनं सर्ववेदानां सर्वतीर्थावगाहनम्। सत्येन वहते लोके सर्वमाप्नोत्यसंशयम्॥ २८॥ अश्वमेध-सहस्रं च सत्यं च तुलया धृतम्। लक्षाणि क्रतवश्चैव सत्यमेव विशिष्यते॥ २९॥ सत्येन देवाः पितरो मानवोरगराक्षसाः। प्रीयन्ते सत्यतः सर्वे लोकाश्च सचराचराः॥ ३०॥ सत्यमाहुः परं धर्मं सत्यमाहुः परं पदम्। सत्यमाहुः परं ब्रह्म तस्मात्सत्यं सदा वदेत्॥ ३१॥ मुनयः सत्यनिरतास्तपस्तप्त्वा सुदुश्चरम्। सत्यधर्मरताः सिद्धास्ततः स्वर्गं च ते गताः॥ ३२॥ अप्सरोगणसंविष्टैर्विमानैः परिमातृभिः। वक्तव्यं च सदा सत्यं न सत्याद्विद्यते परम्॥ ३३॥ अगाधे विपुले सिद्धे सत्यतीर्थे शुचिह्रदे। स्नातव्यं मनसा युक्तं स्थानं तत्परमं स्मृतम्॥ ३४॥ आत्मार्थे वा परार्थे वा पुत्रार्थे वापि मानवाः। अनृतं ये न भाषन्ते ते नराः स्वर्गगामिनः॥ ३५॥ वेदा यज्ञास्तथा मन्त्राः सन्ति विप्रेषु नित्यशः। नो भान्त्यपि ह्यसत्येषु तस्मात्सत्यं समाचरेत्॥ ३६॥ व्यास उवाच॥ तपसो मे फलं ब्रूहि पुनरेव विशेषतः। सर्वेषां चैव वर्णानां ब्राह्मणानां तपोधन!॥ ३७॥ सनत्कुमार उवाच॥ प्रवक्ष्यामि तपोऽध्यायं सर्वकामार्थसाधकम्। सुदुश्चरं द्विजातीनां तन्मे निगदतः शृणु॥ ३८॥ तपो हि

इस लोक तथा परलोक में मनुष्यों को तृप्त करते हैं। इसलिये ये धर्मपुत्र कहे गये हैं॥ २१॥ तालाब खुदवाने वाला, वृक्षारोपण करने वाला, यज्ञ करने वाला तथा सत्यवादी ब्राह्मण—ये कभी स्वर्ग से च्युत नहीं होते॥ २२॥ सत्य ही परब्रह्म है, सत्य ही परम तप है, सत्य ही परम यज्ञ और सत्य ही सर्वश्रेष्ठ शास्त्र है॥ २३॥ सोये हुए पुरुषों में सत्य ही जागता है, सत्य ही परमपद है, सत्य ने ही पृथ्वी को धारण किया है, अतः सब कुछ सत्य में प्रतिष्ठित है॥ २४॥ तप, यज्ञ, पुण्य, देव, ऋषि, पितर-पूजन, जल, विद्या—ये सब सत्य मे ही स्थित है॥ २५॥ सत्य ही यज्ञ, तप, दान, मंत्र, सरस्वती देवी तथा ब्रह्मचर्य है तथा सत्य ही ओंकार है॥ २६॥ सत्य से वायु बहता है, सत्य से सूर्य तपता है, सत्य से अग्नि में उष्णता है और स्वर्ग सत्य मे ही टिका हुआ है॥ २७॥ सभी वेदों की रक्षा, सभी तीर्थों का स्नान सत्य से ही होता है। संसार के सभी पदार्थ सत्य से मिलते हैं॥ २८॥ हजारों अश्वमेध यज्ञ तथा लाखों क्रतु तराजू पर रखे तो सत्य सबसे महान् सिद्ध हुआ॥ २९॥ सत्य से ही देवता, पितर, मानव, नाग, राक्षस तथा चर-अचर समस्त लोक सत्य से ही तृप्त होते है॥ ३०॥ सत्य को ही परम धर्म कहा है। सत्य ही परम पद है, सत्य ही परब्रह्म है, इसलिये सदा सच बोलना चाहिये॥ ३१॥ सत्य में तत्पर मुनिजन कठोर तप करके सत्य धर्म में सफल होने के बाद स्वर्ग गये॥ ३२॥ अप्सराओं से घिरे हुए विमानों पर बैठे हुए पुरुषों को भी सदा सत्य भाषण करना चाहिये। क्योंकि सत्य से बढ़कर कुछ भी नहीं है॥ ३३॥ गहरे तथा विस्तृत सुप्रसिद्ध तीर्थ में या पवित्र सरोवर में मन लगाकर स्नान करना चाहिये। वह उत्तम स्थान कहा गया है॥ ३४॥ जो मनुष्य अपने लिये, अपने पुत्र के लिये या दूसरों के लिये भी झूठ नहीं बोलते, वे स्वर्ग को जाते हैं॥ ३५॥ ब्राह्मणों में वेद, यज्ञ तथा मन्त्र रहते हैं, किन्तु असत्यवादी में वे शोभा नहीं पाते, अतः सत्य भाषण करे॥ ३६॥ **व्यासजी ने कहा**—हे तपोधन! ब्राह्मणों के तथा सभी वर्णों के तप का फल मुझसे विशेष रूप से फिर कहिये॥ ३७॥ **सनत्कुमारजी ने कहा**—सभी इच्छाओं तथा अर्थ के साधक ब्राह्मणों द्वारा किये जाने वाले कठोर तप का मैं वर्णन करता हूँ, तुम सुनो॥ ३८॥ तप को सर्वश्रेष्ठ कहा है, तप से ही सब फल मिलते हैं। जो नित्य तप करते है, वे देवताओं के साथ आनन्द लेते हैं॥ ३९॥ तपस्या से

परमं प्रोक्तं तपसा विद्यते फलम्। तपोरता हि ये नित्यं मोदन्ते सह दैवतैः॥ ३९॥ तपसा प्राप्यते स्वर्गस्तपसा प्राप्यते यशः। तपसा प्राप्यते कामस्तपः सर्वार्थसाधनम्॥ ४०॥ तपसा मोक्षमाप्नोति तपसा विन्दते महत्। ज्ञानविज्ञानसम्पत्तिः सौभाग्यं रूपमेव च॥ ४१॥ नानाविधानि वस्तूनि तपसा लभते नरः। तपसा लभते सर्वं मनसा यद्यदिच्छति॥ ४२॥ नातप्ततपसो यान्ति ब्रह्मलोकं कदाचन। नातप्ततपसां प्राप्यः शङ्करः परमेश्वरः॥ ४३॥ यत्कार्यं किञ्चिदास्थाय पुरुषस्तपते ततः। तत्सर्वं समवाप्नोति परत्रेह च मानवः॥ ४४॥ सुरापः परदारी च ब्रह्महा गुरुतल्पगः। तपसा तरते सर्वं सर्वतश्च विमुञ्चति॥ ४५॥ अपि सर्वेश्वरः स्थाणुर्विष्णुश्चैव सनातनः। ब्रह्मा हुताशनः शक्रो ये चान्ये तपसान्विताः॥ ४६॥ अष्टाशीति सहस्राणि मुनीनामूर्ध्वरेतसाम्। तपसा दिवि मोदन्ते समेता दैवतैः सह॥ ४७॥ तपसा लभ्यते राज्यं स च शक्रः सुरेश्वरः। तपसाऽपालयत्सर्वमहन्यहनि वृत्रहा॥ ४८॥ सूर्याचन्द्रमसौ देवौ सर्वलोकहिते रतौ। तपसैव प्रकाशन्ते नक्षत्राणि ग्रहास्तथा॥ ४९॥ न चास्ति तत्सुखं लोके यद्विना तपसा किल। सुखं सर्वमिति वेदविदो विदुः॥ ५०॥ ज्ञानं विज्ञानमारोग्यं रूपवत्त्वं तथैव च। सौभाग्यं चैव तपसा प्राप्यते सर्वदा सुखम्॥ ५१॥ तपसा सृज्यते विश्वं ब्रह्मा विश्वं विना श्रमम्। पाति विष्णुर्हरोऽप्येति धत्ते शेषोऽखिलां महीम्॥ ५२॥ विश्वामित्रो गाधिसुतस्तपसैव महामुने!। क्षत्रियोऽथाभवद्विप्रः प्रसिद्धं त्रिभवे त्विदम्॥ ५३॥ इत्युक्तं ते महाप्राज्ञ! तपोमाहात्म्यमुत्तमम्। शृण्वध्ययनमाहात्म्यं तपसोऽधिकमुत्तमम्॥ ५४॥

इति श्रीशिवमहापुराणे पञ्चम्यामुमासंहितायां तपोमाहाम्यवर्णनं नाम द्वादशोऽध्यायः॥ १२॥

स्वर्ग तथा सुयश मिलता है और इसी से सभी कामनाओं की पूर्ति होती है॥ ४०॥ तपस्या से महान् ज्ञान, विज्ञान, सौभाग्य तथा सुन्दर रूप मिलता है और तपस्या से ही मोक्ष भी मिलता है॥ ४१॥ अनेक प्रकार की वस्तुओं को मनुष्य तपस्या से पाता है और तपस्वी मन से जो-जो चाहता है, वह सब पा जाता है॥ ४२॥ बिना तपस्या किये कोई भी ब्रह्मलोक नहीं पहुँचते। परमेश्वर शिवजी भी तपस्या के बिना नहीं मिलते॥ ४३॥ जिस किसी कार्य को सोचकर मनुष्य तपस्या करता है, उसे वह इस लोक तथा परलोक में पाता है॥ ४४॥ शराबी, परस्त्री से रति करने वाला, ब्रह्महत्या करने वाला तथा गुरुपत्नी-गमन करने वाला भी तपस्वी सभी पापों से मुक्त होकर तर जाता है॥ ४५॥ सबके स्वामी शिवजी, सनातन विष्णु, ब्रह्मा, अग्नि, इन्द्र और भी जो कोई तपस्या करते हैं॥ ४६॥ अट्ठासी हजार ऊर्ध्वरेता मुनि अपने तपोबल से स्वर्ग में देवताओं के साथ आनन्द करते हैं॥ ४७॥ तपस्या से राज्य मिलता है। देवताओं के राजा इन्द्र प्रतिदिन सबका पालन करते हैं॥ ४८॥ सबका हित करने वाले सूर्य और चन्द्रमा, ग्रह, नक्षत्र आदि तप से प्रकाशित होते हैं॥ ४९॥ तपस्या के बिना संसार में किसी प्रकार का सुख नहीं मिलता। वेदों को जानने वाले कहते हैं कि तपस्या से ही सभी प्रकार का सुख मिलता है॥ ५०॥ ज्ञान, विज्ञान, आरोग्य, सुरूपता तथा सौभाग्य तपस्या से ही प्राप्त होता है॥ ५१॥ तपस्या से ही ब्रह्माजी बिना परिश्रम के संसार की सृष्टि, विष्णु रक्षा, शिव विनाश तथा शेषनाग पृथ्वी को धारण करते हैं॥ ५२॥ हे महामुनि!

अथ त्रयोदशोऽध्यायः

सनत्कुमार उवाच॥ तपस्तपति योऽरण्ये वन्यमूलफलाशनः। योऽधीते ऋचमेकां हि फलं स्यात्तत्समं मुने!॥१॥ श्रुतेरध्ययनात्पुण्यं यदाप्नोति द्विजोत्तमः। तदध्यापनतश्चापि द्विगुणं फलमश्नुते॥२॥ जगद्यथा निरालोकं जायतेऽशशिभास्करम्। विना तथा पुराणं ह्यध्येयमस्मान्मुने! सदा॥३॥ तप्यमानं सदाज्ञानान्निरये योऽपि शास्त्रतः। सम्बोधयति लोकं तं तस्मात्पूज्यः पुराणगः॥४॥ सर्वेषां चैव पात्राणां मध्ये श्रेष्ठः पुराणवित्। पतनात्त्रायते यस्मात्तस्मात्पात्रमुदाहृतम्॥५॥ मर्त्यबुद्धिर्न कर्तव्या पुराणज्ञे कदाचन। पुराणज्ञः सर्ववेत्ता ब्रह्मा विष्णुर्हरो गुरुः॥६॥ धनं धान्यं हिरण्यं च वासांसि विविधानि च। देयं पुराणविज्ञाय परत्रेह च शर्मणे॥७॥ यो ददाति महाप्रीत्या पुराणज्ञाय सज्जनः। पात्राय शुभवस्तूनि स याति परमां गतिम्॥८॥ महीं गां वा स्यन्दनांश्च गजानश्वांश्च शोभनान्। यः प्रयच्छति पात्राय तस्य पुण्यफलं शृणु॥९॥ अक्षयान्सर्वकामांश्च परत्रेह च जन्मनि। अश्वमेधमखस्याऽपि स फलं लभते पुमान्॥१०॥ महीं ददाति यस्तस्मै कृष्टां फलवतीं शुभाम्। स तारयति वै वंश्यान्दश पूर्वान्दशापरान्॥११॥ इह भुक्त्वाखिलान्कामानन्ते दिव्यशरीरवान्। विमानेन च दिव्येन

गाधिपुत्र क्षत्रिय विश्वामित्र तपस्या से ही ब्राह्मण हुए, जो तीनों लोकों में प्रसिद्ध है॥५३॥ हे महाप्राज्ञ! तपस्या का उत्तम माहात्म्य तुमसे मैंने कह दिया है। अब तपस्या से भी अधिक अध्ययन का माहात्म्य है, उसे सुनिये॥५४॥

इस प्रकार परममाहेश्वर **पण्डित तारादत्त त्रिपाठी** के पुत्र **डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी** द्वारा रचित **शिवाटीका,** टिप्पणी आदि से संवलित शिवमहापुराण में तपोमाहात्म्य-वर्णन नामक बारहवाँ अध्याय समाप्त॥१२॥

सनत्कुमारजी ने कहा—हे मुनि! जो कन्द, मूल, फल खाकर वन में तप करता है, उतना ही फल वेद की एक ऋचा के पाठ का होता है॥१॥ उत्तम ब्राह्मण को वेद के पढने से जो फल मिलता है, उससे भी दूना फल उसे शिष्यों को पढ़ाने से मिलता है॥२॥ हे मुनि! जैसे सूर्य तथा चन्द्रमा के बिना संसार प्रकाश रहित हो जाता है, वैसे ही पुराणों के बिना भी। अतः सदैव पुराणों का अध्ययन करना चाहिये॥३॥ अज्ञान के कारण जो नरक में कष्ट भोग रहा है, उसे भी जो समझता है, ऐसा पुराणविद् पूज्य होता है॥४॥ सभी पात्रों (योग्यों) में पुराणवेत्ता इसलिये श्रेष्ठ होता है कि वह मनुष्य को पतन से बचाता है॥५॥ पुराणवेत्ता को सामान्य पुरुष न समझें, क्योंकि वह सब कुछ जानता है। अतः वह ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा गुरु के समान है॥६॥ दोनों लोकों में सुख पाने के लिये धन, धान्य, सोना तथा अनेक प्रकार के वस्त्र पुराणवेत्ता विद्वान् को देना चाहिये॥७॥ जो अत्यन्त आदर से पुराणवेत्ता को उत्तम पदार्थ देता है, वह परमगति को प्राप्त होता है॥८॥ पृथ्वी, गाय, रथ, उत्तम हाथी, घोड़े पुराणविद् को देता है, उसके पुण्य फल को सुनो॥९॥ सभी अक्षय कामनाओं को वह इस लोक और परलोक में पाता है और उस पुरुष को अश्वमेध यज्ञ का भी फल मिलता है॥१०॥ जो लहलहाती फसल से युक्त भूमिदान करता है, वह आगे-पीछे के अपने दस वंशों को तार देता है॥११॥ इस लोक में सम्पूर्ण सुखों को भोगकर अन्त में दिव्य शरीर वाला होकर विमान द्वारा वह दिव्य शिवलोक को जाता है॥१२॥ प्रोक्षण